नामांक Roll No.

No. of Questions – **15**

No. of Printed Pages – **4**

SS-26-Raj. Sah.

राजस्थानी साहित्य (RAJASTHANI SAHITYA)

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2020

समय : 3¼ घण्टे

पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियाँ सारु सामान्य निर्देश :

(1) परीक्षार्थी सबसूं पैली आपरै प्रस्न पत्र माथै नामांक जरूर लिखै ।

(2) **सगळा** सवाल करना जरूरी है ।

(3) हरेक सवाल रौ पड़ूत्तर उत्तर पुस्तिका में ईज लिखणो है ।

(4) जिण सवाल रा अेक सूं अधिक भाग है तो वां सगळा रा उत्तर अेक साथै लगातार लिखौ ।

(5) लेखन मांय सुद्धता अर वैज्ञानिक विवेचन करियां ज्यादा अंक दिरीजैला ।

(6) वर्तनी, व्याकरण अर सुलेख रौ विसेस ध्यान राखौ अर ओपतौ पड़ूत्तर देवौ ।

(7) पड़ूत्तर राजस्थानी भासा में ईज देवणा है ।

(8) पूर्णांक अर प्रस्नांक ठावी ठौड़ अंकित है ।

1. नीचै लिख्या गद्यावतरणां री सप्रसंग व्याख्या करौ –

(क) तिण राजा रै च्यारि मित्र । आगियौ वेताल । कवडियो जुवारी । माणिकदे मदवांण । खापरौ चोर । सु राजा भोज रै घरे आया । घणा कायदा किया । अनेक भांत री भक्ति हुई । घणा सनमान दे नै कह्यौ – पनरहवीं विद्या मोनुं जिण भांत आवे, तिम करौ । **4**

अथवा

इण तरहै बोलकर मुरलीधरजी झट अेक अंग्रेजी लिखबावाळा नै बुलाकर घणी नम्रता सूं अेक चिट्ठी साहब कै नाम लिखाकर भेजी कै म्हांका भाई की भूल सूं काळी बनात नौ रूपिया वार थी सूं बारा को भाव लगायौ गयौ छै, सूं बीजक दुरस्त करनै उत्ता रूपिया भेज दीजौ ।

(ख) तेजाराम सोच में पड़ग्यो कै इण बापू गांधी देस नै बांटण वाळी बात रो घणो विरोध कर्‌यौ । लोगां नै, नेतावां नै कितरा समझाया । भारत म्हारी मां है । आपणी सगळां री मां है । भेळा रैवौ, पण जिन्ना सरीखा धरमांध माणस हित री बात नीं सुणी । देस बंटग्यो–तीन हिस्सां में । **4**

अथवा

माटी खासी ताळ तांई अबोली रैयी, अमूझबौ करी । पछै टसकती होळैसी'क बोली, "म्हारी मानै जणै तौ पाणी रा घड़ा मटकियां बणायलै, जिकै सूं सगळां री तिस बुझाय सकूं अर गांव–नगर सगळी ठौड़ चावी बण सकूं । जनसेवा करनै आगोतर सुधार सकूं ।

(ग) म्हारी अंतिम–जातरा में सामल लोगां में वै लोग ई भेळा हा, जका मौकौ लाग्यां म्हारी टांग खींचण सूं नीं चूकता, पण आज अरथी रै खांधौ देवण सारू ताता दीसै हा । म्हारी आतमा नैं तो इणमें ई वांरौ कोई स्वारथ निगै आयौ । 'राम नाम सत है' रै नारे सागै वां लोगां में ई सत वापरग्यौ । **4**

अथवा

आपां जीवण में जिकौ कीं देखां, कै जिकी आपां पर बीतै वै ई अणभव अर वै ई घाव कल्पना में पूगनै साहित्य सिरजण री प्रेरणा उपजावै । कवि या साहित्यकार में अणभूती रौ जित्तौ तीखो आवेग व्है, उणरी रचना उत्ती ई आकरसी अर आलै दरजै री व्है ।

2. कहाणी रै तत्त्वां रै आधार माथै 'अलेखूं हिटलर' कहाणी री विरोळ करौ । **4**

3. "वैताल पच्चीसी री कथा सीख देवै कै खाली विद्या हासल करण सूं कीं नीं होवै, उणरौ उपयोग सावळ अर बगतसर करणौ चाईजै ।" इण कथन रै पख में आपरा विचार प्रगट करौ । **4**

4. 'सुख–दुख' निबंध रौ सार आपरा सबदां में लिखौ । **4**

5. "कन्हैयालाल सेठिया री पोथी 'गळगचिया' री गद्य कवितावां मिनख खातर मोटी सीख है ।" इण कथन नै सिद्ध करौ । **4**

6. "राजस्थानी साहित्य रौ मध्यकाल साचै अरथा में भक्तिकाल है ।" इण कथन नै पुख्ता करण सारू आपरा विचार प्रगट करौ । **6**

7. नीचै लिख्या विषयां मांय सूं किणी **अेक** विषय माथै राजस्थानी भाषा में निबंध लिखौ – **6**

(i) राजस्थानी साहित्य मांय वीर काव्य

(ii) म्हारी चावी पौथी

(iii) मिनखपणै रा पुजारी – महात्मा गांधी

(iv) इंटरनेट – वरदान या सराप ।

8. नीचै लिख्या पद्यांशां री सप्रसंग व्याख्या करौ –

(क) चालियउ उलगाणउ कातिग मास । **4**

छोडीया मंदिर घर कविलास ।।

छोडीया चउबारा चउखंडी,

तठइ पंथ सिरि नयणा गमाइया रोइ ।

अथवा

देवी नाम भागीरथी नाम गंगा,

देवी गंडकी गोगरा राम गंगा;

देवी सर्सती जम्मना सरी सिद्धा,

देवी त्रिवेणी त्रिस्थली ताप रूद्धा ।

(ख) आयौ इंगरेज मुलक रै ऊपर, **4**

आहस लीधा खैंचि उरां ।

धणियां मरै न दीधी धरती,

धणियां ऊभां गई धरा ।।

अथवा

पिये तमाखू कापुरस,

सापुरसां हिय साल ।

सालै निस दिन समझणां,

चालै चाल कुचाल ।।

(ग) म्हारी पांसळी **4**

थारै हेत री सूळ खुबै, मां
अर गिलगिली री ठौड़
अेक पीळा जरद, दरद रौ पसराव
म्हैं परसेवै घांण ।
बोलूं तो किण आसरै
बडाउआं भासा गुमाय दी ।

अथवा

रोज हवारै
भेत मातै टंगेलौ तंबूरौ उतरै
नै एना बदनसीबी नु गान
घेरै-घेरै करै
नै बजाड़वा वारा नै
अलावौ दै, आंतड़ियं नी खौराक
अेक वाटली आटौ ।

9. 'रणमल्ल छंद' मांय 'रणमल्ल' रौ अनमी सुभाव अर उणरा मायड़ भोम सारू विचारां नै लिखौ । **4**

10. 'समान बाई' री भक्ति किण भांत री ही ? भक्ति भावना नै प्रगट करण वाळा पदां रौ भाव लिखौ । **4**

11. 'सपनौ आयौ' कविता रै माध्यम सूं कवि लोगां नै कांई संदेस देवणौ चावै ? समझावौ । **4**

12. 'लिछमी' कविता रै पाण कवि रेवतदांन चारण कांई कैवणौ चावै ? आपरै सबदां में समझावौ । **4**

13. 'काव्य' री परिभासा अर इणरै भेदां री जाणकारी देवौ । **4**

14. 'कुंडळिया' छंद री परिभाषा दाखला साथै समझावौ । **4**

15. 'उपमा' अलंकार री परिभाषा लिखता थकां इणरै भेदां रो खुलासौ करौ । **4**